पी.जी.डी.टी.

अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम (पी.जी.डी.टी.)

सत्रीय कार्य
2014

(जनवरी 2014 और जुलाई 2014 सत्रों में
प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110 068

अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम
पाठ्यक्रम 01 से 04 (पी.जी.डी.टी.-01 से 04)
सत्रीय कार्य 2014

(जनवरी 2014 और जुलाई 2014 सत्रों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.

प्रिय विद्यार्थियो,

जैसा कि 'अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम' की 'कार्यक्रम दर्शिका' में आपको बताया गया है कि इस स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम में पढ़ाई के साथ-साथ आपको कुछ सत्रीय कार्य भी करने हैं। इसके लिए चार पाठ्यक्रमों के अंतर्गत आपको एक-एक सत्रीय कार्य करना होगा। ये सत्रीय कार्य आपकी आंतरिक परीक्षा है। अतः इन्हें ध्यानपूर्वक और पूरे परिश्रम के साथ करें। प्रत्येक पाठ्यक्रम के सत्रीय कार्य आप अपनी सुविधा के अनुसार अलग-अलग प्रस्तुत कर सकते हैं और एक साथ भी प्रस्तुत कर सकते हैं :

पाठ्यक्रम	प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि	
	जनवरी 2014 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए	जुलाई 2014 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए
पी.जी.डी.टी.-01 अनुवाद : सिद्धांत और प्रविधि	**30.09.2014**	**31.03.2015**
पी.जी.डी.टी.-02 अनुवाद का भाषिक और सामाजिक पक्ष	**30.09.2014**	**31.03.2015**
पी.जी.डी.टी.-03 व्यावहारिक अनुवाद के विविध स्तर और क्षेत्र	**30.09.2014**	**31.03.2015**
पी.जी.डी.टी.-04 प्रशासनिक अनुवाद	**30.09.2014**	**31.03.2015**

उद्देश्य : प्रस्तुत कार्यक्रम के अंतर्गत आपको अनुवाद सिद्धांत और प्रविधि, अनुवाद के सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों, उसकी प्रक्रिया तथा बारीकियों की जानकारी देते हुए, विविध क्षेत्रों में अनुवाद का अभ्यास कराया गया है। सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और उसे कहाँ तक व्यवहार में ला सकते हैं। यानी आपको इस योग्य बनाना है कि अध्ययन के दौरान जो जानकारी आपको प्राप्त हुई है उसे अपने शब्दों में विधिवत प्रस्तुत कर सकें और अनुवाद कार्य में उसे व्यवहार में लाते हुए अच्छा अनुवाद कर सकें।

सत्रीय कार्य करने से पहले कुछ बातें

1) उत्तर के लिए फुलस्केप कागज का **ही इस्तेमाल करें**।
2) प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए अलग उत्तरपुस्तिका बनाएँ। इस तरह आपके चार सत्रीय कार्यों के लिए चार उत्तरपुस्तिकाएँ होनी चाहिए।
3) अपनी उत्तरपुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के दाहिने कोने के सबसे ऊपर अपना नामांकन संख्या, पूरा पता लिखें तथा तिथि सहित हस्ताक्षर करें।
4) अपनी उत्तर-पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के बायें कोने पर कार्यक्रम का शीर्षक, पाठ्यक्रम का कोड, उसका शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड तथा अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखें।

आपका सत्रीय कार्य इस प्रकार आरंभ होना चाहिए :

कार्यक्रम का शीर्षक : ..... नामांकन संख्या : .....
नाम : .....
पता : .....
.....

पाठ्यक्रम कोड :.....
पाठ्यक्रम का शीर्षक : .....
सत्रीय कार्य कोड : ..... हस्ताक्षर :.....
अध्ययन केंद्र का नामः ..... तिथि : .....

5) पाठ्यक्रम के कोड तथा सत्रीय कार्य के कोड सत्रीय कार्य पर मुद्रित होते हैं और वहां से देखकर लिखे जा सकते हैं। प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

6) अपने उत्तर केवल फुलस्केप कागज पर लिखें और उन्हें अच्छी तरह नत्थी कर दें। बहुत पतले कागज पर न लिखें। बायीं ओर 4 सेमी. का हाशिया छोड़ दें। एक उत्तर और दूसरे उत्तर के बीच कम से कम 4 पंक्तियों का स्थान छोड़ें। ऐसा करने से परीक्षक उचित स्थान पर अपनी टिप्पणी दे पाएंगे।

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

इस सत्रीय कार्य में आपसे तीन तरह के प्रश्न पूछे गए हैं। लंबे निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 400 शब्दों में, और लघु निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर 200-250 शब्दों में देने हैं। व्यावहारिक अनुवाद संबंधी प्रश्नों के उत्तर समुचित कोश का उपयोग करते हुए प्रसंग और संदर्भानुसार देने हैं।

- प्रत्येक सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़ें और यदि कोई विशेष निर्देश दिए गए हों तो उनका पालन करें। सत्रीय कार्य जिन इकाइयों पर आधारित हैं उन्हें पढ़ लें। प्रश्न के संबंध में महत्त्वपूर्ण बातों को नोट कर लें, फिर उनको व्यवस्थित करके अपने उत्तर की रूपरेखा बनाएँ।
- जब आपको विश्वास हो जाए कि जो उत्तर आप देने जा रहे हैं संतोषजनक है, तब उन्हें साफ-साफ लिखें और जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दें।
- अनुवाद के व्यावहारिक प्रश्नों को करते समय "कोश" का भरपूर प्रयोग करें। विषय एवं संदर्भ का विशेष ध्यान रखें। हिंदी और अंग्रेजी के कथनों की तुलना करें। यह देखें कि अनुवाद से वही अर्थ निकल रहा है जो मूल सामग्री से निकलता है। यह भी सुनिश्चित करें कि आपका अनुवाद लक्ष्य भाषा की उपयुक्त शैली के अनुरूप है, स्रोत भाषा की छाया मात्र नहीं। अनुवाद में मूल लेखन की-सी सहजता लाने के लिए अपनी कल्पनाशीलता और लेखन-क्षमता का उपयोग करें।
- निबंधात्मक प्रश्नों का उत्तर देते समय प्रस्तावना और निष्कर्ष के संबंध में विशेष ध्यान दें। प्रस्तावना संक्षेप में होनी चाहिए। इसमें यह बताएँ कि प्रश्न से आप क्या समझते हैं और आप क्या लिखने जा रहे हैं। निष्कर्ष में आपके उत्तर का सार होना चाहिए। उत्तर सुसंगत और सुसंबद्ध हों। वाक्यों और अनुच्छेदों में परस्पर तालमेल होना चाहिए। उत्तर सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्न से संबद्ध होना चाहिए। यह देख लें कि आपने प्रश्न में निहित सभी मुख्य बातों के उत्तर शामिल किए हैं।

सत्रीय कार्य पूरा करने के बाद यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपके उत्तर तार्किक और सुसंगत हों,
ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हों,
ग) उत्तर सही ढंग से लिखे गए हों तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति उत्तर के पूर्णतया अनुरूप हों,
घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबे न हों, और

ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से वर्तनी और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

च) उत्तर अपने हाथ से लिखें। इसे मुद्रित या टाइप न करें। अपने उत्तर को विश्वविद्यालय द्वारा आपके पास भेजी गई इकाइयों से नकल न करें। यदि आप ऐसा करते हैं तो आपको कम अंक मिलेंगे।

छ) अन्य विद्यार्थियों के उत्तरों से नकल न करें, यदि यह पाया जाता है कि आपने नकल की है तो आपके सत्रीय कार्यों को अस्वीकृत कर दिया जाएगा।

ज) प्रत्येक सत्रीय कार्य को अलग-अलग लिखें।

झ) प्रत्येक उत्तर के साथ उसके प्रश्न की संख्या लिखें।

ञ) सत्रीय कार्य को पूरा करके इसे अध्ययन केंद्र के पास भेज दें। अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य की उत्तर-पुस्तिका को किसी भी स्थिति में **मुख्यालय के मूल्यांकन प्रभाग को मूल्यांकन के लिए न भेजें।**

ट) अध्ययन केंद्र में सत्रीय कार्य को प्रस्तुत करते समय निर्धारित प्रेषण एवं पावती कार्ड पर अध्ययन केंद्र से (सत्रीय कार्य प्राप्त किए) प्राप्ति दर्ज करा लें।

ठ) यदि आपने क्षेत्र को बदलने के संबंध में निवेदन किया है तो आप अपने सत्रीय कार्यों को अपने पहले के अध्ययन केंद्र में ही तब तक भेजते रहें जब तक विश्वविद्यालय की ओर से आपको क्षेत्रीय केंद्र बदलने की सूचना नहीं भेज दी जाती।

पी.जी.डी.टी-01
अनुवाद सिद्धांत और प्रविधि
सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.
पाठ्यक्रम कोड : पीजीडीटी-01
सत्रीय कार्य कोड : पीजीडीटी-1/एएसटी-01(टीएमए)/2014

अधिकतम अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

भाग-1
(खंड 1, 2, 3 पर आधारित)

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 400 शब्दों में दीजिए। 8X5=40

   i) 'अनुवाद' के संदर्भ में पाठधर्मी और प्रभावधर्मी आयाम स्पष्ट करते हुए उनकी तुलना कीजिए।
   ii) अंतः भाषिक और अंतरभाषिक अनुवाद का अंतर सोदाहरण बताइए।
   iii) राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ में अनुवाद का महत्व समझाइए।
   iv) शब्द–प्रतिशब्द अनुवाद और शाब्दिक अनुवाद का अंतर स्पष्ट कीजिए।
   v) नाइडा द्वारा दिए गए अनुवाद प्रक्रिया के तीन सोपानों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
   vi) अनुवादक के गुण और दायित्व का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
   vii) कोशों के विभिन्न प्रकार और उनकी उपयोगिता की चर्चा कीजिए।
   viii) अननुवाद्यता की संकल्पना स्पष्ट कीजिए।

2. निम्नलिखित शब्दों को कोश के क्रम में लिखिए : 4

क्षमा	pen
क्षत्रिय	peace
कुशल	pace
कोमल	prize
कमल	people
कंगन	popular
किंकिण	pin
कुप्रथा	punish
कागज़	pack
किफायत	pleasure
कौशल	push
कैलाश	plant
क्लांति	psychology
क्वचित	prose
किशोर	pilferage
काय	put
कसौटी	pick
कुशाग्र	pose
कुपित	photo
कुंठा	pit

3. कालिदास के चार पाश्चात्य अनुवादकों के नाम बताइए। 2

4. हिंदी के किन्हीं चार–कोशकारों के नाम बताइए। 2

5. निम्नलिखित का पता लगाने के लिए आप किन कोशों का उपयोग करेंगे? 2
   क) 'पुरातत्व' शब्द का अर्थ
   ख) 'भिंडी' शब्द के भारतीय भाषाओं में पर्याय

भाग 2
(खंड 4, 5, 6 पर आधारित)

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 400 शब्दों में दीजिए: 8X5=40

   i) अनुवाद में व्यतिरेकी विश्लेषण किस–किस स्तर पर किया जाता है सोदाहरण उत्तर दीजिए।
   ii) भाषा और संस्कृति के विकास में अनुवाद की भूमिका स्पष्ट कीजिए।
   iii) अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद में आने वाली समस्याओं की सोदाहरण चर्चा कीजिए।
   iv) विज्ञान, कला और शिल्प के रूप में अनुवाद की व्याख्या कीजिए।
   v) लोकोक्तियों और मुहावरों के अनुवाद की प्रक्रिया समझाइए।
   vi) मशीनी अनुवाद क्या है? इसमें मशीन--मानव सहयोग का वर्णन कीजिए।
   vii) अनुवाद मूल्यांकन की पद्धतियों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
   viii) 'न कुछ छोड़ना न कुछ जोड़ना' का सिद्धांत अनुवाद पर कहाँ तक लागू होता है?

7. निम्नलिखित का अनुवाद उपयुक्त मुहावरों का प्रयोग करते हुए कीजिए। 4

   i) वह हर वक्त काम से जी चुराता है।
   ii) तुम मेरे साथ चाल चल रहे हो।
   iii) उसने बहुत छिपाने की कोशिश की लेकिन उसका भांडा फूट ही गया।
   iv) रमेश की तो अक्ल पर पत्थर पड़ गए हैं।

8. निम्नलिखित लोकोक्तियों का हिंदी रूप बताइए। 2
   i) The grass is greener on the other side.
   ii) Mills of Gods grind slowly.
   iii) Beggars cann't be choosers.
   iv) All cats are grey in dark.

9. नीचे के अंग्रेजी पाठ और उसके हिंदी अनुवाद को पढ़िए और अनुवाद का पुनरीक्षण कीजिए। 4

Steps to be taken

A return on complete ban on ivory is impertative as sanctioned sales of the raw material continue to put elephant at risk. The international animal syndicate involved must be dealt with strongly with tough laws that destroy the supply-demand chains of ivory.

But the inmmediate need of the hour is to educate friends and family on ivory. Many believe that ivory falls out naturally like a teeth. People must be made aware of the poaching and barbaric extraction of ivory from dead elephants. Discourage your friends from using items made of ivory such as combs, jewellery and artefacts. Tell them that such objectives are not to be valued as it comes at the cost of an innocent life.

उठाने वाले कदम

हाथी दाँत पर पूरी रोक पर एक वापसी आदेशक है जैसे कच्चे माल की मंजूर बिक्रियों जारी होने से हाथी पर खतरा रखता है। अंतर्राष्ट्रीय अपराधी परिषद शामिल होना चाहिए मज़बूरी से डील किया जाए सख्त कानूनों से जो हाथी दाँत की माँग सप्लाई जंजीर का नाश करे।

पर घंटे की शीघ्र जरूरत है मित्रों और परिवार की हाथी दाँतों पर शिक्षा। अनेक विश्वास करते हैं कि हाथी दाँत, दाँत की तरह अपने आप गिराता है। लोगों को जानकार बनाया जाना चाहिए। अतिक्रमण तथा मरे हाथियों से जंगली निष्कर्षण के बारे में अपने मित्रों को हतोत्साह करें हाथी दाँत की मदों के बारे में जैसे कंघा, गहने, शिल्प उपकरण। उन्हें बताएँ कि ऐसी मदों की कीमत न लगाएँ जैसे यह आती है एक मासूम जिंदगी की कीमत से।

पी.जी.डी.टी–02
अनुवाद का भाषिक और सामाजिक पक्ष
सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.
पाठ्यक्रम कोड : पीजीडीटी–02
सत्रीय कार्य कोडःपीजीडीटी–02 / एएसटी–01(टीएमए) / 2014

अधिकतम अंक : 100

नोट : **सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।**

भाग 1
(खंड 1, 2, 3 पर आधारित)

1. **निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग 400 शब्दों में दीजिए।** 8X5=40

   i) भाषा की संरचनात्मक इकाइयों का सोदाहरण परिचय दीजिए और किसी एक इकाई को व्यवस्था के रूप में समझाइए।

   ii) अनुवाद कार्य में भाषाई सक्षमता की भूमिका सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

   iii) उपसर्ग और प्रत्यय का अंतर स्पष्ट करते हुए हिंदी में प्रयुक्त होने वाले फारसी के उपसर्गों के उदाहरण दीजिए।

   iv) अंग्रेजी के सतत वर्तमान क्रियारूप का हिंदी के किन–किन क्रियारूपों द्वारा अनुवाद किया जाता है उदाहरण सहित उत्तर दीजिए।

   v) देवनागरी लिपि के मानकीकरण के विषय में विचार करते हुए बताइए कि वे कौन–से वर्ण हैं जिनके एक से अधिक रूप प्रचलित हैं और इन वर्णों का कौन सा रूप मौनक माना गया है।

   vi) पारिभाषिक शब्दावली से आप क्या समझते हैं? प्राचीन भारत में पारिभाषिक शब्दावली की क्या स्थिति थी? आधुनिक हिंदी के संदर्भ में उस शब्दावली का किस प्रकार उपयोग किया जाता है?

   vii) हिंदी की लिंग–व्यवस्था से जुड़ी अनुवाद की समस्याओं पर उदाहरण सहित प्रकाश डालिए।

   viii) हिंदी में उपलब्ध यांत्रिक सुविधाओं के मद्देनज़र देवनागरी लिपि में हुए परिवर्तनों का परिचय दीजिए।

2. (क) निम्नलिखित में से प्रत्येक उपसर्ग का प्रयोग करते हुए दो–दो शब्द बनाइए। 5
   अन–, आ–, उत्–, कु–, दुः–,

(ख) निम्नलिखित में से प्रत्येक प्रत्यय का प्रयोग करते हुए दो शब्द बनाइए।
इक–, –ई, –ईला, –प्रद, –युक्त

3. निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों के हिंदी पयार्य लिखिए: 5

Warm welcome, bio-diversity, solar system, superpower, vocational curriculum, self-learning material, nomination, generation gap, ad-hoc, eco-friendly.

भाग 2
(खंड 4, 5, 6, पर आधारित)

4. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग 400 शब्दों में दीजिए। 5X8=40

i) बहुभाषिक समाज में अनुवाद की आवश्यकता और उसके महत्व को स्पष्ट कीजिए।
ii) हमारे यहाँ अनुवाद संबंधी रोजगार के क्या–क्या अवसर उपलब्ध हैं?
iii) दूसरी भाषा से आप क्या समझते हैं? दूसरी भाषा शिक्षण में अनुवाद का क्या महत्व है? क्या अनुवाद दूसरी भाषा–शिक्षण का आवश्यक अंग होना चाहिए?
iv) मूल्यांकन सामग्री के अनुवाद में किन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए?
v) उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयों तथा संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषा के विषय में संविधान में क्या प्रावधान हैं?
vi) सांस्कृतिक आदान–प्रदान में अनुवाद के महत्व पर प्रकाश डालिए।
vii) भारतीय प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता और स्थिति पर प्रकाश डालिए।
viii) अनुवाद में होने वाली शैलीगत तथा अर्थगत अशुद्धियों के उदाहरण देते हुए उनके कारणों की चर्चा कीजिए।

5. हिन्दी में अनुवाद कीजिए। 5

The *amala* tree mingles perfectly with Indian culture. According to Hindu mythology, once when Brahma was engrossed in the meditation of Vishnu, tears started rolling from his eyes. When these tears fell on the ground, the *amla* germinated.

The tree is called Embelica myrobalan in scientific parlance. It is a small, leafy tree that grows across India and bears an edible fruit (termed gooseberry by the British people during colonial days). An *amla* tree fruits for 65-70 years. The berry is rich in pectin and vitamin C; it is an essential ingredient of the popular herbal tonic chyawanprash. A single fruit contains more vitamin C than three oranges or 16 bannas. It is valued for its precious oil which is used for treatment of hair and scalp problems. *Amla* oil is prepared from dried berries, which have been soaked in coconut oil for several days; this helps extract the oil soluble vitamins from the fruits.

The fruit has unparallel medicinal properties. It improves eyesight and purifies blood. It helps treat bile and cough. It enhances food absorption. The berry is ideal for calming mild to moderate hyperacidity and other digestive problems. It fortifies the liver, lungs and the nervous system.

In India, the area under *amla* cultivation has been expanding rapidily-from just 3,000 hectares in the early 1980s to over 50,000 hectares in 2003. The trends indicated that the

area would increase to one lakh hectares by 2005. The fruit cultivated most in Uttar Pradesh followed by Gujarat. The plant can be grown on wasteland.

6. अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए। 5

(क) विज्ञान प्रसार ने भोपाल में विज्ञान को लोकप्रिय बनाने की संभावनाओं को तलाशने की एक पहल की है। इसके अंतर्गत कम्प्यूटर पर आधारित वैज्ञानिक प्रयोगों के प्रदर्शन की श्रृंखला प्रारम्भ की गई है। विज्ञान प्रसार के अधिकारियों श्री वी.के.जोशी और श्री रिन्तूनाथ ने 1 से 3 दिसम्बर तक भोपाल का दौरा किया और उन्होंने भोपाल क्षेत्र की नवोदय विद्यालय समिति के जिला शिक्षा अधिकारी से मुलाकात की। कम्प्यूटर पर आधारित वैज्ञानिक प्रयोगों का प्रदर्शन तीन स्कूलों में किया गया। प्रदर्शन के तहत् यह दर्शाया और बताया गया कि ताप, ध्वनि की तीव्रता, आर्द्रता, विद्युत धारा आदि के मापन एवं नियंत्रण पर आधारित प्रोजेक्टों में विद्यार्थी किस प्रकार कम्प्यूटर का प्रयोग कर सकते हैं। इस प्रदर्शन में 500 से अधिक विद्यार्थियों तथा 20 स्कूली अध्यापकों ने भाग लिया।

(ख) अण्डमान और निकोबार द्वीप समूहों में सुनामी आने से जब सभी दूर संचार व्यवस्थाएँ ध्वस्त हो गई थीं तब कुछ समय के लिए हैम रेडियो (Ham Radio) ही सुनामी प्रभावित क्षेत्रों के लिए संचार का एकमात्र साधन रह गया था। हैम रेडियो शौकिया लोगों द्वारा चलाई जाने वाली एक प्रकार की रेडियो प्रसारण व्यवस्था है। यह घर से भी चलाया जा सकता है। प्रायः यह घर से ही चलाया जाता है। हैम रेडियो चलाने वाले स्वयंसेवी आपस में एक दूसरे से जुड़े होते हैं। 26 दिसम्बर 2004 को सुनामी आने के तत्काल बाद ही देश के विभिन्न कोनों के हैम रेडियो ऑपरेटर सुनामी प्रभावित क्षेत्रों की ओर रवाना हो गए और उनके हैम रेडियो तुरन्त पोर्ट ब्लेयर, कार निकोबार, छोटा अण्डमान और कैम्पबेल क्षेत्रों में सक्रिय हो गए। हैम रेडियो स्वयं सेवियों की कई टीमें गुजरात, आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक से गईं और उन्होंने हैम रेडियो स्टेशन अण्डमान और निकोबार द्वीप समूहों से चलाए। दक्षिण भारत के तटीय क्षेत्रों के राहत कैम्पों से भी हैम रेडियो स्टेशन तत्काल सक्रिय हो गए।

पी.जी.डी.टी–03
व्यावहारिक अनुवाद के विविध स्तर और क्षेत्र
सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.
पाठ्यक्रम कोड : पीजीडीटी–03
सत्रीय कार्य कोडः पीजीडीटी–03/एएसटी–01(टीएमए)/2014

अधिकतम अंक : 100 अंक

नोट : सभी प्रश्नों के दीजिए।

खंड 1, 2, 3, 4, 5, 6 पर आधारित

1. निम्नलिखित का हिन्दी में अनुवाद कीजिए। 10

i) Sometimes things turn out for the better.
ii) But it falls short of being the alternative reality led perspective.
iii) Two policemen have been suspended for nearly beating a fellow policeman to death.
iv) Seven of those injured in the accident are stated to be serious.
v) HIV among injecting drug users remain a great challenge.
vi) The practices concerned are most widespread in South Africa and South Asian diasporas.
vii) The shadow of the crescent moon revolves around three brothers and three

momentous hours of their lives.

viii) These are a few excerpts from an interview with the author.

ix) Now, it's true that Germany has been running big surpluses for almost a decade.

x) Then came the crisis and flow of capital to Europe's periphery collapsed.

2. **निम्नलिखित का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए:** 10

1. अबुल फज़ल के अनुसार आगरा में कृषि अपनी पूर्णता पर थी।
2. शानदार मुगल शासकों के अधीन आगरा अपने ज़माने का आश्चर्य बन गया था।
3. इस गाथा में अनेक प्रचलित लोक विश्वास सम्मिलित हैं।
4. यह आख्यान एक मानवीय नायक के रूपांतरण और दैवीकरण के इर्द–गिर्द केंद्रित है।
5. इस सत्याग्रह को बिना डर के आगे ले जाने की कांग्रेसियों की ललक प्रशंसनीय थी।
6. महात्मा गांधी ने भारत के स्वाधीनता संग्राम को विशिष्ट वर्ग (बुर्जुआ वर्ग) के आंदोलन से – ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में – जन आंदोलन में बदल दिया।
7. विपत्ति मानव तक सीमित नहीं रही, वरन उसका प्रभाव उद्यानों की बर्बादी में भी देखने को मिला।
8. कसीदा अरबी–फारसी साहित्य की पद्य विधा है, जो वास्तव में प्रशस्ति काव्य है।
9. ऐसी मान्यता है कि फतेहपुर सीकरी दो दशक से भी कम समय के लिए राजधानी रही क्योंकि वहाँ जल आपूर्ति की घोर कमी थी।
10. लगभग दो शताब्दियों से अधिक भारतीय साम्राज्य की राजधानी रहे आगरा में ही मुगल स्थापत्य कला की नींव पड़ी।

4. निम्नलिखित का हिंदी में अनुवाद कीजिए। 10X4=40

(क) Lizards are reptiles that primarily eat insects. However, some lizards do eat other vertebrates and sometimes even plants. Most lizards are herbivores. But some like the Komodo dragon in the Indonesian islands, feed on mammals.

Lizards are ectotherms, meaning their activity depends on their external temperature. Global warming is the increase of Earth's average surface temperature due to effect of greenhouse gases, such as carbon dioxide emissions from burning fossil fuels or from deforestation, which trap heat that would otherwise escape from Earth. This is a green house effect.

Lizards respond to global warming in two ways: adapt and survive, or die. In temperature zones like North America, lizards are vulnerable to climate change. Their reproduction is closely tied to narrow windows of time in the spring and summer. Heat does not kill the lizards but instead it prevents them from reproducing.

In tropical countries like India lizards cannot regulate their body temperature. On hot days, they tend not to move around much, preferring to laze in cool burrows so as not to get too hot. Global warming causes the weather to get hotter and stay hotter longer and lizards, especially species that live in the tropical areas spend more time seeking refuge out of the sun. Staying in the shade for such long periods causes irreparable damage to the breeding cycle and eggs do not hatch.

The disappearance of the lizard population is likely to cause a break in the food chain. Lizards are important prey for many birds, snakes, and other animals, and they are important predators of insects. Thus they are an important part of the food chain.

Climate change is occurring too rapidly for lizards to compensate with physiological adaptations to higher body temperatures.

(ख) MASTERPIECES LOOTED BY NAZIS FOUND

Berlin : Nearly 1,500 priceless paintings including works by Picasso and Matisse stolen by the Nazis have been discovered in a flat in Munich, a news report has said.

The German weekly *Focus* said police came upon the paintings during a 2011 search in an apartment belonging to the octogenarian son of art collector Hildebrand Gurlitt, who had bought them during the 1930s and 1940s. The search was carried out because the son, Cornelius Gurlitgt, was under suspicion for tax evasion. *Focus* said. The resport said the works were thought to be worth around €1 billion ($1.3 billion) on today's market.

The artworks lay hidden amid old jam jars and junk in darkened rooms for more than half a century, the paper said. Gurlitt, a recluse without a job, had sold a few over the course of the years, living off the proceeds.

His father, despite having a Jewish grandmother, had become indispensable to Germans because of his expertise and network of contacts. Hitler's propaganda minister Joseph Goebbels put him incharge of exporting the art, which the Nazi party considered "degenerate".

The collection included many of the great masters, among them the German painters Email Nolde, Franz Marc, Max Bechmann and Max Liebermann. Among the paintings discovered was one by Henri Matisse that had belonged to the Jewish collector Paul Rosenberg. The paintings are stored safely in a customs ware-house outside Munich. *Focus* said. The Nazis massively plundered artworks in Germany and across Europe before and during World War II, confiscating many from Jews or forcing them to sell their works at a low price. Between 1940 and 1944, German forces seized an estimated 100,000 paintings, art works, tapestries and antiques from the homes of Jews in France, stripped of their rights by the racial laws enforced by the collaborationist government. Thousands of stolen artworks have since been returned to their owners or their descendants, but many more have never resurfaced. In 2007 a German expert published a book on looted art, estimating that thousands of masterpieces and tens of thousands of lesser works had yet to be restored to their owners.

(ग) 300-DAY MARS ODYSSEY BEGINS TODAY

Chennai : With the weather holding fine and the state-of-art Mission Control Centre becoming the nerve-centre of activity, the countdown is gathering momentum at the spaceport at Sriharikota for the lift-off of the Polar Satellite Launch Vehicle (PSLV-C25) on Tuesday for the Indian Space Research Organisation's (ISRO) debut attempt to send a spacecraft to Mars, about 40 crore km away. "The countdown is going on as per schedule. Everything is progressing well. The weather is good," K. Radhakrishnan, Chairperson, Indian Space Research Organisation (ISRO), told *The Hindu* from Sriharikota around 5.15 p.m. on Monday. "Everybody is working seriously for the launch." At the end of the 56.5-hour countdown which began at 6.08 a.m. on Sunday, the XL version of the PSLV will rise from the first launch pad at 2.38 p.m. on Tuesday and put the Mars spacecraft first into an earth-bound orbit after a flight duration of 43

minutes. The spacecraft will voyage for 300 days before it reaches the Martian orbit. The orbiter weighs about 1,350 kg and will carry five instruments to conduct a battery of remote-sensing experiments on the availability of methane on the Red Planet, its upper atmosphere, its surface features, mineralogy and so on. This totally indigenous mission – the rocket and the five payloads come from various ISRO centres across the country – is the silver jubilee launch of the PSLV; that is, its 25th launch.

Dr.Radhakrishnan said a mission to Mars was more complex than India's Chandrayaan-1 mission to the moon because of the distance involved. At its nearest, Mars is 55 million km away and it can be as far as 400 million km away when it is farthest from the Earth. S. Arunan, Project Director, ISRO's Mars orbiter, said charging of the lithium-ion batteries on board the Mars spacecraft was under way on Monday afternoon. Mr. Arunan explained that the lithium-ion batteries were needed as a stand-by on board the spacecraft till the orbiter's solar panels were deployed. "In case the demand for power goes beyond the solar panels' capacity, say during the eclipse conditions, the batteries will come to our rescue. These batteries will then be made operational. They are like the UPS (uninterrupted power supply)," he added. ISRO's Mars orbiter builders studied the successes and failures of the American, the Russian and the European Space Agency's (ESA) missions to Mars before they built the spacecraft and the mission profile it should follow. Mr. Arunan said : "We complied the data of the failed scenarios of all the erstwhile launches of the U.S. Russia and the ESA. These failures have been reported well by their Failure Analysis Committee (FAC). We went through these FAC reports so that we do not make the same mistakes in our mission."

(घ) MORE FIRE INCIDENTS IN DELHI THIS DIWALI

New Delhi : Despite the police and the fire department taking more measures to ensure an incident-free Diwali, the total number of fire-related incidents was higher this year with one death and 365 cases of burns being registered. The deceased, identified as Raj Kumar (23) from Ghaziabad, was admitted to Safdarjung Hospital on Saturday and died the following day. The Delhi Fire Services (DFS) received a total of 266 calls throughout the day, some even after midnight. Giving the break-up of the calls, a fire officer said 177 calls were made till 12 midnight. They received another 89 in the next few hours. The corresponding number in 2012 was 252 while it was below 250 in 2011.

On Diwali day, 165 burn cases were registered in Safdarjung, 60 in Ram Manohar Lohia Hospital, less than 50 cases in Guru Teg Bahadur Hospital, 35 in Lok Nayak Jayaprakash Hospital and 55 cases in Deen Dayal Upadhyay Hospital. Last year, the city reported 173 cases of burn injuries in 24hours at Safdarjung Hospital and over 100 cases in 48 hours in Ram Manohar Lohia. All the reported incidents on Diwali night fell under the category of "small to minor".

The fire department had stationed an additional 20 fire engines in different parts of the city. The police, too, had braced themselves for the challenge posed by these incidents and said they received close to 500 calls of fire. Special Commissioner of Police (Operations) T.N. Mohan said the police control room staff had to attend to fire incident calls and added that the department had taken more measures to check fire related accidents this year. "Normally due to manpower restrictions, we do not use our entire fleet of PCR vans but on Diwali day, all 807 vans were pressed into service. This year we took additional steps, including increasing the number of incoming lines in the

police control room," Mr. Mohan said. The senior police officer said even in fire incidents, people call up the police first. "We have a hotline linked with the fire department to attend to these cases with one or two members attending the calls. On Sunday, we stepped up this number as well to ensure an incident-free Diwali," Mr. Mohan said.

5. निम्नलिखित का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए। 10X3=30

(क) आकाश में छलांग

भारत के मंगल अभियान की शुरुआत इसकी वैज्ञानिक प्रगति का एक बहुत अहम मुकाम है। इस अभियान के मंजिल पर पहुंचने के बाद इसरो यानी भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन मंगल तक पहुंच बनाने वाला दुनिया का चौथा वैज्ञानिक संस्थान हो जाएगा। अभी तक अमेरिका, रूस और यूरोपीय संघ की अंतरिक्ष एजेंसियां ही मंगल तक यान भेजने में सफल रही हैं। जाहिर है, विकासशील देशों में इस तरह की उपलब्धि सबसे पहले भारत के हाथ लगने की उम्मीद है। मंगल अभियान का सपना चंद्र मिशन की सफलता से शुरू हुआ जिसने पहली बार चंद्रमा पर पानी की संभावना के संकेत दिए। अलबत्ता इस खोज में अमेरिका की अंतरिक्ष एजेंसी नासा द्वारा तैयार बेहद संवेदी उपकरणों की भी अहम भूमिका थी। चंद्र मिशन की कामयाबी से उपजे उत्साह का ही असर था कि पिछले साल अगस्त के शुरू में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने मंगल अभियान के प्रस्ताव को हरी झंडी दे दी।

सभी काम निर्धारित चरणों में हो गए और एक साल के भीतर सभी तैयारियां पूरी कर ली गईं। इतने कम समय में मंगल तक यान भेजने की तैयारी इससे पहले शायद कभी नहीं हुई थी। भारत जैसे देश में, जहां तमाम योजनाएं लक्ष्य से हमेशा पीछे चलती रहती हैं और बार–बार उनकी समय–सीमा बढ़ानी पड़ती है, यह तथ्य बहुत मायने रखता है। यह भी कम महत्वपूर्ण नहीं है कि इसरो ने बहुत कम खर्च में इस अभियान को मूर्त रूप दिया है। यह इसरो के वैज्ञानिकों के अथक प्रयासों का ही नतीजा है कि मंगल अभियान का काम इतने व्यवस्थित और समयबद्ध ढंग से चला है। इस अभियान का मकसद लाल ग्रह के वातावरण और भू–स्थितियों का अध्ययन करना है। इसके लिए यान में पांच विशेष उपकरण लगाए गए हैं जो देश में ही निर्मित किए गए हैं। अभियान का एक उद्देश्य मंगल पर मीथेन का भी पता लगाना है ताकि वहां जीवन की संभावना के संकेत तलाशे जा सकें।

हालांकि अभी तक की खोजों से मंगल पर जीवन की उम्मीद के कोई सूत्र नहीं मिले हैं, पर सृष्टि के रहस्यों को भेदने की वैज्ञानिकों की बेचैनी अंतहीन है। मंगल पर जीवन के प्रारंभिक रसायन का कोई वजूद मिले या नहीं, इस अभियान से गहरे अंतरिक्ष में हमारी पहुंच बढ़ सकती है। इससे सौर मंडल के दूसरे ग्रहों तक पहुंच बनाने की कोशिशों को बल मिलेगा। अंतरिक्ष–कार्यक्रमों को अब कारोबार से भी जोड़ कर देखा जाने लगा है। कई अन्य देशों को उपग्रह प्रक्षेपित करने में मदद कर इसरो ने पहले ही इस दिशा में अपनी क्षमता साबित की है। उसके मंगल अभियान पर पूरी दुनिया की नजर है और इसकी सफलता से यान प्रक्षेपण में उसकी अंतरराष्ट्रीय साख और बढ़ जाएगी। पर ज्यादा महत्वपूर्ण उपलब्धि व्यावसायिक नहीं, वैज्ञानिक होगी। मंगलवार को श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष अनुसंधान केंद्र से दोपहर बाद यान छोड़ा गया और पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के मुताबिक पृथ्वी की कक्षा में स्थापित हो गया। पच्चीस दिन तक पृथ्वी की परिक्रमा करने के बाद यह मंगल के लिए रवाना होगा। मंगल की चालीस करोड़ किलोमीटर की दूरी तय कर यह मंगल की कक्षा में पहुंचेगा। वहीं इसके सामने सबसे कठिन चुनौती होगी। विभिन्न देशों की ओर से मंगल के लिए भेजे गए कुल इक्यावन अभियानों में इक्कीस ही सफल हो सके हैं, क्योंकि उन्हें ग्रह की कक्षा में स्थापित कर पाना आसान नहीं होता। आपात स्थिति में निर्देश देना और पाना भी वैज्ञानिकों के लिए एक चुनौती भरा काम होता है। अगर इन चुनौतियों से पार पाने में इसरो सफल हो गया तो आकाश में यह

बड़ी छलांग होगी। पर एक स्वाभाविक सवाल यह उठता है कि देश के सामने खड़ी तमाम समस्याएं हल करने में ऐसा जज्बा क्यों नहीं दिखाई देता।

(ख) 'वारसा सम्मेलन में नहीं बदले जाएंगे मूल सिद्धांत'

नई दिल्ली, 5 नवंबर (जनसत्ता)। जलवायु परिवर्तन पर वारसा (पोलैंड) में होने वाले विश्व सम्मेलन के पूर्व यहां आयोजित बैठक में पोलैंड की पर्यावरण उपमंत्री बियाटा ट्रेवेस्क्या ने यहां कहा कि आगामी सम्मेलन (कॉप– कान्फ्रेंस ऑफ पार्टीज) में समग्रता, पारदर्शिता और निष्पक्ष प्रक्रिया पर गौर किया जाएगा। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि वारसा में नया समझौता तो हो सकता है, पर करार (कन्वेंशन) के बुनियादों सिद्धांतों में किसी तरह का बदलाव करने का इरादा नहीं है।

सम्मेलन के पूर्व आयोजित नागरिक जमात की परामर्श बैठक में उन्होंने आगे कहा कि वारसा सम्मेलन में ऐसे प्रयास किए जाएंगे ताकि अगले दौर की राह सुगम हो सके। बियाटा ने आगे कहा कि पोलैंड, पेरू और फ्रांस के साथ मिलकर 'तिकड़ी नजरिए' पर काम कर रहा है ताकि मार्च 2015 के पहले एक मसविदा–करार तैयार हो सके और पेरिस सम्मेलन से पहले किसी नतीजे पर पहुंच सकें।

नागरिक जमात की आशंकाओं को दूर करते हुए उन्होंने यह भी कहा कि वारसा में जलवायु परिवर्तन पर पहले हुए करार को नए सिरे से तैयार करने का इरादा नहीं है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि सम्मेलन में हमारा जोर अनुकूलन और जलवायु–वित्त प्रबंधन पर रहेगा। हालांकि हम मानते हैं कि क्रियान्वयन के सभी उपाय समान रूप से अहम हैं और वारसा में हम सभी पर ध्यान केंद्रित करेंगे।

गौरतलब है कि कॉप (कान्फ्रेंस ऑफ पार्टीज) का आयोजन वारसा में 11 से 23 नवंबर तक होगा। सम्मेलन के पहले सलाह मशविरे के लिए नई दिल्ली में इस बैठक का आयोजन बियांड कोपेनहेगन ने एमआईएसईआरईओओर (मिसरिओर) और ऑक्सफेम इंडिया के सहयोग से किया था। बैठक में चीन, ऑस्ट्रेलिया, नावें, मैक्सिको के प्रतिनिधियों ने भी आगामी सम्मेलन के प्रति अपनी उम्मीदें साझा कीं।

इससे पहले नागरिक जमात के विभिन्न संगठनों ने कॉप–19 को लेकर विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। चर्चा के बीच नागरिक जमात ने मांग की पर्यावरण संतुलन के लिए स्पष्ट और समानता पर आधारित रूपरेखा तैयार की जाए। ऑक्सफेम इंडिया की वनिता सुनेजा ने कहा जलवायु–फाइनेंस (वित्त प्रबंधन) को लेकर मौजूदा असमानता चिंताजनक है। इससे भारत जैसे विकासशील देशों का चिंतित होना लाजिमी है। साउथ एशियन डायलॉग्स ऑन इकोलाजिकल डेमोक्रेसी (साडेड) के विजय प्रताप ने कहा कि जलवायु विज्ञान की मांग है कि लोगों की तकलीफों को दूर करने के लिए तेजी से प्रयास किए जाएं। सीएसई के चंद्रभूषण का कहना था कि इसी सदी के अंत तक धरती का ताप दो डिग्री सेल्सियम कम करने के लिए उत्सर्जन की मात्रा घटाने के प्रयास किए जाएं। सीएएनए के संजय वशिष्ठ ने कहा कि वारसा सम्मेलन में गीगाटन की असमानता को खत्म किया जाए और जलवायु वित्त प्रबंधन के लिए स्पष्ट प्रतिबद्धताएं दिखाई जाएं। बैठक में अपनी बात रखते हुए शरद जोशी और मनीष श्रीवास्तव ने वारसा सम्मेलन की कामयाबी के लिए उपाय सुझाए।

बियांड कोपेनहेगन की ओर से सौम्या दत्ता ने कहा कि पहले की बैठकों में वित्त का मामला उठता रहा है, वारसा सम्मेलन में बिना देरी के इस मसले पर गौर होना चाहिए। पैरवी (पीएआइआरवीआइ) के अजय झा ने कहा कि हाल में आई विभिन्न रपटों में जलवायु परिवर्तन के प्रभावों की ओर संकेत किया गया है। उत्सर्जन घटाव, अनुकूलन और क्रियान्वयन के सभी उपायों पर विचार करने के लिए युद्ध स्तर पर प्रयास की दरकार है।

इस बैठक में नागरिक जामत, मीडिया, दूतावासों, उच्चायोगों से जुड़े सौ प्रतिनिधियों ने शिरकत की।

पर्व और प्रदूषण

हर साल सरकारें दिवाली पर पटाखे कम से कम चलाने की अपील करती हैं। मगर यह गुज़ारिश बेअसर ही साबित होती है। हर बार दिवाली के दिन शोर पिछली बार से कुछ बढ़ा हुआ होता है और अगले दिन धुएं की परत अधिक मापी जाती है। पटाखे जलाते हुए घायल होने वालों और आग लगने से संपत्ति के नुकसान का आंकड़ा भी बढ़ा नजर आता है। पटाखे फोड़ने से ध्वनि और वायु प्रदूषण का स्तर बढ़ने के आंकड़ें महानगरों में अधिक दर्ज होते हैं, जबकि माना जाता है कि वहां सबसे शिक्षित और जागरूक लोग रहते हैं। जन–जागरूकता अभियानों और आतिशबाजी संबंधी नियम–कायदे बनाने, सख्ती आदि के बावजूद इस प्रवृत्ति पर रोक नहीं लग पा रही तो इसे क्या कहें। इस दिवाली पर दिल्ली और गुड़गांव, फरीदाबाद, गाजियाबाद, नोएडा आदि इसके पड़ोसी शहरों में फोड़े गए पटाखों की वजह से पिछले साल की तुलना में धुएं की परत अधिक गाढ़ी हो गई। नतीजतन अगले दिन से दिल्ली के आसमान में धुंध छा गई। ध्वनि का स्तर सत्तर से लेकर बयासी डेसिबल तक दर्ज हुआ, जबकि सामान्य दिनों में यह पचपन–छप्पन डेसिबल रहता है। ऐसे में दिल और सांस के मरीजों की हालत का अंदाजा लगाया जा सकता है। आतिशबाजी में दो सौ छियासठ जगहों पर आग लगी, करीब ढाई सौ लोग जख्मी हुए और दर्जनों गाड़ियाँ जल कर खाक हो गई। उत्सव में उमंग स्वाभाविक है, पर यह ऐसा नहीं होना चाहिए जिससे लोगों की सेहत पर बुरा असर पड़े, जान–माल का नुकसान हो।

यों भी दिल्ली और आसपास के शहरों में वाहनों की बढ़ती तादाद के चलते वायु और ध्वनि प्रदूषण के स्तर को नियंत्रित करना चुनौती बना हुआ हैं। उसमें आतिशबाजी के चलते इसमें और बढ़ोतरी कई परेशानियों की वजह बनती है। पिछले कुछ सालों से देखा गया है कि सर्दी और गर्मी का मौसम शुरू होते वक्त धूलकण पृथ्वी की सतह के करीब जमा हो जाते हैं, जिससे कई दिनों तक धुंध का वातावरण बना रहता है। इससे न सिर्फ दमा के रोगियों की तकलीफ बढ जाती है, कई ऐसे विषाणु भी पैदा होते हैं जो खांसी, जुकाम, बुखार आदि का सबब बनते हैं। किसी भी त्योहार का मतलब सौहार्द बढ़ाना, पुरानी जड़ताओं को दूर कर नए उल्लास और संकल्प के साथ जीवन को गति देना होता है। आतिशबाजी का प्रदर्शन ही उल्लास का पर्याय क्यों होना चाहिए? अब तो दिल्ली के अलावा पटाखे छोड़ने के कई और मौके भी हो गए हैं। मसलन, किसी क्रिकेट मैच में भारतीय टीम की जीत पर खुशी का इजहार करने के लिए खूब पटाखे छोड़े जाते हैं। यों रात दस बजे के बाद पटाखे नहीं छोड़े जाने चाहिए। यह नियम दिवाली पर भी लागू है। पर आधी रात तक या उसके बाद भी पटाखों का बेतहाशा सिलसिला चलता रहता है। आतिशबाजी की कोई सीमा नहीं रह गई है तो इसका एक कारण यह है कि जीवन के हर अवसर पर प्रदर्शनप्रियता बढ़ी है। पटाखों के निर्माण और बिक्री आदि को लेकर नियम–कायदे बने हुए हैं, सर्वोच्च न्यायालय भी कुछ मौकों पर निर्देश दे चुका है। मगर हर दिवाली पर चोरी–छिपे पटाखे बनाने–बेचने का कारोबार बड़े पैमाने पर होता है। इसके चलते पटाखे बनाने वाले कारखानों में आग लगने और कई लोगों के झुलस जाने, जान गंवा देने की घटनाएं होती हैं। लोगों को सोचना होगा कि पर्यावरण को साफ–सुथरा बनाने में सरकार के साथ–साथ उनकी भी जिम्मेदारी अहम है। जब ज्यादातर त्योहार आतिशबाजी के बगैर उल्लास से मनाए जाते हैं, तो दिवाली पर संयम क्यों नहीं बरता जा सकता।

6. निम्नलिखित का सारानुवाद एक तिहाई शब्दों में कीजिए। **10**

NOT FOR SALE

A dense, white material, ivory comes from the tusks and teeth of animals such as the elephant, walrus, hippopotamus, pig and sperm whale, Among these, elephants have

been hunted the most as their tusks are made up of ivory. In 2012 alone, 35,000 African elephants were poached for their tusks. The elephant's ancestor, the mammoth, was also prized for its giant tusks with parcels of Siberian mammoth ivory weighing 10 to 20 tonnes being common in the ivory markets of the 1890s.

Consisting of dentine, a tissue that is similar to bone, ivory is fibrous and easy to carve. It is also a durable material – if not exposed to high temperatures or humidity. Its durability and ability to survive over time makes ivory a coveted item that has driven its sales in the black market, causing the death of over 60 per cent of forest elephants in the last decade.

Today ivory is mostly extracted from elephants in Africa and Asia. This ivory extracted from elephants in West Africa has been found to be harder, while ivory from East African elephants is softer, more white and easier to carve. The tusks of an African elephant are on an average 6-6 ft in length and weigh about 23 kg. Tusks from the Asian elephant or Elephas Maximus are comparatively smaller, usually five feet in length and 16 kg in weight. The demand for ivory, both legal and on the black market is the single greatest threat to African elephants. In India, even though the elephant is venerated and is seen as a symbol of friendship, it is hunted for its tusks. While habitat loss and train accidents were seen as threats in India, poaching remains the major cause of death of wild elephants. The Wildlife Protection Society of India (WPSI), recorded the loss of over 121 elephants due to poaching between 2008 and 2011. During the period, WPSI records show 781 kg of ivory, 69 tusks, 99 pieces of ivory carvings and 75 ivory bangles were seized from across the country.

The Ban

The international trade in elephant ivory has been banned since 1989. The ban was approved by CITES (Convention on International Trade in Endangered Species) that also allowed two legal sales of ivory in 1999 and 2008. Despite these efforts large quantitites of ivory continue to move illegally from Africa to Asia, which has emerged as the largest market for ivory. Since January 2011, more than 30 tonnes of ivory in large consignments have been seized. This number represents the poaching of over 3,000 elephants. A market for ivory flourishes in China and Japan and is the driving force of the global illegal ivory trade as well as the poaching that constitutes it. Other south east Asian countries such as Malaysia, Vietnam and Thailand are also believed to contribute significantly to the illegal ivory trade, either as countries providing transit or providing easy entry of ivory into a so-called 'legal' market by way of loopholes.

The reality today is that the level of poaching and illegal trade in ivory is spiralling out of control. The price of ivory on the black market remains high as does its demand in south east Asian markets. In July 2012, CITES recognized that elephant poaching had reached 'unsustainable' levels, not only in small unprotected populations but also among larger populations traditionally regarded as safe.

पी.जी.डी.टी–04
प्रशासनिक अनुवाद
सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.
पाठ्यक्रम कोड : पीजीडीटी–04
सत्रीय कार्य कोड: पीजीडीटी–04/एएसटी–01(टीएमए)/2014

अधिकतम अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

(खंड 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7 पर आधारित)

1. भाषिक प्रयुक्ति से आप क्या समझते हैं। हिंदी की विभिन्न प्रयुक्तियों का परिचय दीजिए। 10

2. निम्नलिखित शब्दों/अभिव्यक्तियों के हिन्दी पर्याय बताइए: 5X2=10

क)

Comprehension test, snowball effect, photo-synthesis, ex-stock price, bi-lateral agreement, initial pay, stopgap arrangement, source language, steering committee, habeas corpus.

ख)

i. According to rules in vogue
ii. Justification for the proposal
iii. During the course of action
iv. Discrepency may be reconciled
v. As the circumastances may require
vi. Case is resubmitted as directed on the pre-page
vii. Concurrence of the ministry has been sought
viii. Relevant papers may be provided
ix. Approval as per remarks in the margin
x. Due performance of the agreement

3. हिन्दी में अनुवाद कीजिए: 10X5=50

(क) **Mumbai**: bottled water major Bisleri International is making a foray into Bangladesh to expand its reach, and this will be the company's first overseas expansion since this Italian brand was acquired in 1966.

"We are in the midst of starting a plant at Dhaka in Bangladesh. That is yet to start. This will be the first time that Bisleri will venture outside India," Chairman, Bisleri International, told *The Hindu*.

The timing of the opening of this factory is not known. It requires an investment of Rs. 40 to Rs. 45 crore to set up a bottled water plant, including the building.

As whether Bisleri would be interested to explore the Gulf market, the Chairman answered in the negative. "We don't have any plans for the Gulf market, which is very

developed (in terms of bottled water business) and we will be 50th player to be there. It will be very difficult to build the brand. So, we will concentrate on the domestic market, where Bisleri is the category leader," he said.

He said Bisleri had 60 percent market share in the organized bottled water segment, and would grow 30 per cent year after year. The company is now eyeing a turnover of Rs. 1,000 crore in 2004-15. After being acquired for 4 lakh in 1966, the Bisleri brand remained dormant till 1995 when the Chauhans of Parle Group sold their soft drink brands Thums Up, Limca, Gold Spot and Maaza to Coca Cola for $60 million.

"Fortunately, Bisleri was not sold off in the deal. After existing the soft drink business, I fully concerntrated on Bisleri and now here we are being the first mover, Bisleri has become the generic name of bottled water," the Chairman said.

Currently, Bisleri has 52 plants around the country and plans to add one plant every month. "This is how we want to bring down the cost. The transportation cost is murderous," he said. Meanwhile, they are also popularizing Vedica a premium water brand from Bisleri. "We started Vedica three years ago. It is pure spring water from the Himalayas. It will take some time for people to understand the value of natural spring water, and we are targeting premium outlets to sell this brand," the Chairman added.

(ख) **New Delhi** : In view of the assembly elections on December 4, the Delhi Police have launched an awareness drive for their personnel to get enrolled on the voters' list.

"All police stations and officers concerned have been told to spread awareness among the policemen living in government or private accommodations falling under their jurisdictions to get enrolled in the voters' list. The exercise is being carried out on a war footing, with an objective to ensure that the maximum number of those living in the Capital come forward to exercise their franchise in the Assembly elections," said an officer.

Although special camps have been set up, Policemen are also being encouraged to apply for a Voter Identity Card through the Election Commission of India (ECI) website.

The Policemen, who will be a part of the security arrangements for the elections, will cast their votes through postal ballots.

"The date for submission of postal ballots is yet to be intimated to us. However, usually postal ballots are received at special facilitation centres a couple of days before the scheduled election date. We have been asked to collect copies of the voter identity cards/numbers of those living in different parts of the city for the central database," said the officer.

This time round, the police personnel on election duty will be handed over postal ballot forms along with their duty slips. "Our job will be to provide facilities to the policemen who want to cast their votes," said another officer.

The ECI had in August last year issued fresh guidelines for smooth management of postal ballots for police officers on poll duty. All State Chief Electoral Officers were directed to collect information form the Superintendent of Police concerned on the

Assembly constituencies and polling stations where police officers were enrolled, as well as their electoral roll serial numbers.

The information, including residential addresses, was to be entered in the police officers' duty database.

According to the ECI, the voters entitled to postal ballots include members of the armed forces, government officials posted abroad and those on election duty.

(ग) (I) SUCCESS OF NATION DEPENDS ON HOW IT USES ITS RESOURCES, SAYS PRESIDENT

New Delhi : Unless a country understands and adjusts itself to the changes that are taking place around it, its own security will be seriously endangered, especially in the face of power relationships that are constantly changing said President Pranab Mukherjee on Monday.

Addressing members of the 53rd batch of National Defence College at Rashtrapati Bhavan here, the President said global environment poses numerous challenges to world leaders and policy makers because of its dynamic nature. "Security today has many dimensions as it encompasses economic, energy, food, health, environmental and other factors. Intensive research and quality analysis in all the fields and discipline are thus pre requisites which call for a holistic approach to studies across the vast spectrum of disciplines," he said.

Mr. Mukherjee said the success of any nation depends on how effectively it harnesses all the available resources of its disposal, including human resource. He said owing to a premium on natural and man-made resources, there will be intense competititon among the nations to take control of these resources.

(II) AJMER DURONTO TO BECOME JAN SHATABDI

New Delhi : Owing to low occupancy, the Railways has decided to convert the Ajmer-Nizamuddin Duronto Express as a Jan Shatabdi super fast express train with few additional stoppages.

The Ajmer-Nizamuddin Jan Shatabdi train will depart from Ajmer at 5.45 am to reach Nizamuddin station at 12.45 p.m. the same day, according to the new schedule which will be effective from November, 22.

In the return direction the train will depart from Nizamuddin station at 3.05 p.m. to reach Ajmer at 9.55 p.m. the same day.

Since the Duronto train does not have stoppages in between Ajmer and Nizamuddin, the occupancy rate was low and there was demand for stoppages in the route, said a senior Railway Ministry official.-PTI.

(घ)

Office of The Commandant
Field Supply Depot, Army Service Corps
Badami Bagh Cantt, Srinagar

Quotation

Sealed quotations are invited by Field Supply Depot Army Service Corps (ASC), Badami Bagh Cantt, Srinagar from authorized dealers/suppliers for items mentioned below. The quotations must reach this office on dates mentioned below. The quotations will be submitted alongwith sealed samples drawn by the Board of Officers of the same lot as per defence food specifications. The Defence Food Specification can be collected from this Office Security deposit upto 5% per item as per value & DPM-2009 will also be deposited by the dealer/suppliers. The quotations will be opened by the Board of Officers & IFA representative on the same day after 1200 hrs in presence of vendors/representative of firms. The rates quoted should be complete in all respects inclusive of VAT/carriage and delivery at the depot. Any cutting/overwriting may lead to disqualification of the quotation.

S.No.	Items	Quotations must reach this office on
1.	Cheese Td/Spread/Slice/Cube	04 November, 2013 to 31 December, 2013 by 1200 hrs including holidays, Saturday & Sunday (quotation for Saturday, Sunday & Holiday will be on Friday or previous working day).
2.	Almond Giri	
3.	Raisin Brown	
4.	Cashew Kernel	

Commandant, Field Supply Depot, Army Service Corps, Srinagar reserve the right to place the demand to successful supplier for the actual quantity and items required. No claims for compensation will be entertained in case the demand is not placed at all. The items will not be accepted in case the quality of items are not as per Defence Food Specification or supply is delayed. In such case, security deposit will be forfeited and tendering firm will be blacklisted.

Note: Tender action will not be carried out as and when items received from Central Resources or on orders of higher headquarters or in the interest of the organization for which no prior notice will be given and no claims entertained. For any queries regarding LP, office of Commandant, FSD may please be contacted.

Commandant
Field Supply Depot, ASC, Srinagar

(ङ.)

i. It was decided to offer the post of ..... to Shri/Smt./Km. ..... He/She has accepted the offer and reported for duty today in the afternoon. He/She has also produced a relieving order from his/her previous employer. Order regarding his/her posting is put up for approval.

ii. It has been decided that the following transfers and posting will take effect immediately.

iii. With reference to memorandum mentioned above, Shri/Smt./Km. ....., on his/her reversion from the post of General Manager,

Chandigarh Unit, joined as Project Manager in Head Office on ..... (date). He is posted in the Project Division. He/She will report to C.M.D. directly until further orders.

iv. Your appointment will be on probation till ..... but the Corporation may, in its sole discretion, grant extension or extensions in your probationary period. The total probationary period including the extended period shall not exceed 24 months from the commencement of appointment.

v. As full and complete remunerations for all your services you will be paid during the period of probation the following remuneration.

vi. You shall be required to contribute to the provident fund from the date of your confirmation in accordance with the rules of the Corporation.

vii. We shall be considering your case for confirmation on ..... on the basis of the work done during the period from ..... to ..... after checking up your work, to see if it is upto the required standard and to our satisfaction.

viii. In the event of the existing house property or flat the name of the Insurance Company with which the property is insured, policy number, the amount of insurance and other details should be furnished.

ix. This has reference to order No..... dated ..... Conveying sanction for the grant of House building Advance of Rs. ..... to you for the purchase DDA Flat at New Delhi. In this connection, this is to inform you that the loan has been fully disbursed to you and you have taken possession of the house. Hence you are requested to see the undersigned to complete mortgage formalities as per exising HBA Rules to create security against the loan amount.

4. **अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए:** 10X3=30

(क) दिल्ली मे पिछले साल एक मेडिकल की छात्रा के साथ हुई सामूहिक दुष्कर्म की घटना के बाद देश भर में जो आक्रोश पैदा हुआ और शासन के स्तर पर जो सक्रियता दिखी, उससे ऐसे अपराधों पर लगाम लगने की उम्मीद बनी थी। लेकिन उसके बाद पिछले दस महीनों के दौरान महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों के जितने मामले सामने आए हैं उनसे यही लगता है कि इस दिशा में जो उपाय किए जाने थे, नहीं किए गए। यह तथ्य आम आदमी पार्टी के कार्यकर्त्ताओं पर लाठी चार्ज के मसले को लेकर दायर एक जनहित याचिका पर सुनवाई के दौरान खुद दिल्ली पुलिस ने सर्वोच्च न्यायालय के सामने रखा कि जनवरी से लेकर अब तक महिलाओं के विरुद्ध होने वाले सभी तरह के अपराधों में सत्तर फीसदी से ऊपर बढोतरी हुई है। गौर तलब है कि यह वही दौर है जब सरकार या पुलिस के स्तर पर लगातार दावा किया जाता रहा कि महिलाओं की सुरक्षा के मामले पर सख्त मानदंड अपनाए गए हैं। समाज के आधुनिक होते जाने की दलील दी जाती रही है लेकिन सच यह है कि महिलाओं के विरुद्ध अपराध पिछले पाँच सालों में ज्यादा तेज गति से बढ़े हैं। स्त्री को लेकर समाज में मौजूद जड़ प्रवृत्तियों और पितृसत्तात्मक पूर्वग्रहों से निपटने के लिए लैंगिक समानता पर आधारित व्यापक सांस्कृतिक नीति के बिना ऐसे अपराधों से पार पाना मुश्किल बना रहेगा।

(ख) नौसेना प्रमुख करेंगे कर्मचारियों के खिलाफ मामलों की सुनवाई

मुंबई, 5 नवंबर (भाषा)। बंबई हाई कोर्ट ने आदेश दिया है कि सेवा में रहने के दौरान नौसेना के किसी कर्मचारी के खिलाफ उत्पीड़न के आरोपों की सुनवाई और कोर्ट मार्शल की कार्यवाही फौजदारी अदालत नहीं बल्कि नौसेना कमांडर–इन–चीफ करेंगे।

न्यायमूर्ति साधना जाधव ने केंद्र सरकार की ओर से आइएनएस तूणीर के कमांडिंग अधिकारी के आवेदन की सुनवाई करते हुए यह आदेश दिया। आवेदन में अधिकारी ने अपने एक कर्मचारी नरेंद्र

उमेद सिंह दादू का मामला और उसके कोर्ट मार्शल की कार्यवाही अपने हाथ में लेने का अनुरोध किया था। इस कर्मचारी पर एक महिला का शीलभंग करने और उस पर ज्यादती करने का आरोप है। इस आवेदन में उरान की मजिस्ट्रेट अदालत के 27 मई, 2013 के फैसले को चुनौती दी गई थी। इस आदेश में अदालत ने नरेंद्र के खिलाफ दर्ज मामले को अलीबाग सत्र अदालत को सौंपने के साथ ही केंद्र का अनुरोध खारिज कर दिया था। केंद्र ने अपनी याचिका में नरेंद्र का कोर्ट मार्शल करने के लिए उसका मामला अपने हाथ में लेने की अनुमति माँगी थी।

आरोप है कि नरेंद्र और उसके दोस्तों ने इस साल 18 और 20 मार्च को आइएनएस तूणीर में कार्यरत सिद्धार्थ पुनाजी गजभिए की बेटियों पर अभद्र फब्तियां कसी थीं। नरेंद्र के खिलाफ आइपीसी की धारा 354 और 509 के तहत पुलिस में मामला दर्ज किया गया था। 25 मार्च को उसे गिरफ्तार कर लिया गया। केंद्र सरकार ने गत एक अप्रैल को मजिस्ट्रेट के समक्ष आवेदन दाखिल कर मामले में नौसेना अधिनियम के तहत मुकदमा चलाने की मांग की थी। मजिस्ट्रेट ने आवेदन खारिज कर दिया।

उनका मानना था कि नरेंद्र 'अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार रोकथाम) अधिनियम' और 'बच्चों के यौन अपराध से संरक्षण अधिनियम' के प्रावधानों के तहत दंडनीय अपराधों का आरोपी है जिस पर विशेष रूप से सत्र अदालत में मुकदमा चलना चाहिए।

इस फैसले के खिलाफ केंद्र सरकार ने हाई कोर्ट में गुहार लगाई। हाई कोर्ट ने आवेदन को मंजूर करते हुए कहा कि आरोपी ने सेवा में रहने के दौरान अपराध को अंजाम दिया और वह कमांडर की निगरानी में था इसलिए कमांडर–इन–चीफ मामले पर सुनवाई करेंगे।

(ग) एक मैदान पर सर्वाधिक मैच खेलने का रेकार्ड बनाएंगे सचिन

नई दिल्ली, 5 नवंबर (भाषा)। अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट को अलविदा कहने की घोषणा पर चुके सचिन तेंदुलकर बुधवार को जब कोलकाता के ईडन गार्डन पर अपना 199वां टेस्ट मैच खेलने के लिए उतरेंगे तो उनके नाम पर किसी एक मैदान पर सर्वाधिक मैच खेलने का नया भारतीय रेकार्ड दर्ज हो जाएगा।

तेंदुलकर वेस्ट इंडीज के खिलाफ मुंबई में अपना 200वां टैस्ट मैच खेलकर संन्यास ले लेंगे। उन्होंने ईडन गार्डन पर अब तक 12 टैस्ट मैच खेले हैं जिनमें 47.88 की औसत से 862 रन बनाए हैं। ईडन पर सर्वाधिक मैच खेलने का रेकार्ड तेंदुलकर के ही नाम पर है। लेकिन जहां तक किसी एक मैदान पर सर्वाधिक मैच खेलने का सवाल है तो वह यह रेकार्ड संयुक्त रूप से सुनील गावसकर और तेंदुलकर के नाम पर है। गावस्कर ने चेन्नई के एमएम चिदंबरम स्टेडियम चेपक में 12 मैच खेले हैं जिसमें उन्होंने 1018 रन बनाए हैं। इस तरह से ईडन पर तेंदुलकर अपना 13वां टैस्ट मेच खेलेंगे जो नया भारतीय रेकार्ड होगा। यह स्टार बल्लेबाज हालांकि विश्व रेकार्ड से काफी पीछे है जो श्रीलंका के माहेला जयवर्धने के नाम पर है। जयवर्धने कोलंबो सिंहलीज स्पोर्ट्स क्लाब ग्राउंड पर 25 मैच खेल चुके हैं। श्रीलंका के महान स्पिनर मुथैया मुरलीधरन ने इस मैदान पर 24 मैच खेले हैं।

ईडन गार्डन के बाद तेंदुलकर ने मोहाली के पीसीए स्टेडियम में 11मैच खेले हैं। इसमें अब वानखेड़े स्टेडियम का नाम भी जुड़ गया है। तेंदुलकर अब तक दस मैच खेल चुके हैं। इसके अलावा उन्होंने दिल्ली के फिरोजशाह कोटला और चेन्नई के चेपक स्टेडियम में भी दस–दस मैच खेले हैं। विश्व भर में 59 मैदानों पर टैस्ट मैच खेल चुके तेंदुलकर ने बंगलूर के एम चिन्नास्वामी स्टेडियम और अहमदाबाद में सरदार पटेल स्टेडियम मोटेरा में नौ–नौ जबकि नागपुर के वीसीए स्टेडियम में छह टैस्ट मैच खेले हैं। विदेशी मैदानों का जिक्र करें तो यह दिग्गज बल्लेबाज क्रिकेट के मक्का लार्ड्स, मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड, सिडनी क्रिकेट ग्राउंड एडिलेड ओवल और सिंहलीज

स्पोर्ट्स ब्लब ग्राउंड, कोलंबों में पांच–पांच टैस्ट मैच खेल चुके हैं। तेंदुलकर हालांकि अभी तक किसी भी मैदान पर अपनी रन संख्या 1000 तक नहीं पहुंचा पाए हैं। उनके पास ईडन गार्डन और वानखेड़े में यह उपलब्धि हासिल करने का मौका रहेगा। ऐतिहासिक ईडन गार्डन पर 1000 या इससे अधिक रन बनाने वाला दूसरा बल्लेबाज बनने के लिए तेंदुलकर को केवल 138 रन की दरनकार है। वीवीएस लक्ष्मण ने ईडन पर दस मैचों में 1217 रन बनाए हैं जो कि किसी एक मैदान पर सर्वाधिक रन बनाने का भारतीय रेकार्ड है। तेंदुलकर ने ईडन पर दो शतक और छह अर्धशतक जमाए हैं। वे इस मैदान पर सर्वाधिक रन बनाने वाले बल्लेबाजों की सूची में लक्ष्मण और राहुल द्रविड़ (962 रन) के बाद तीसरे नंबर पर हैं।

तेंदुलकर को अपने घरेलू मैदान वानखेड़े स्टेडियम में 1000 टैस्ट रन पूरे करने के लिए केवल 153 रन चाहिए। इस मैदान पर यह स्टार बल्लेबाज 14 से 18 नवंबर के बीच अपना 2000वां टैस्ट मैच खेलेगा। तेंदुलकर ने वानखेड़े में अब तक दस टैस्ट मैचों की 18 पारियों में 47.05 की औसत से 847 रन बनाए हैं जिसमें एक शतक और सात अर्धशतक शामिल हैं।

वानखेड़ें पर सर्वाधिक रन बनाने का रेकार्ड मुंबई के अन्य लिटिल मास्टर गावसकर के नाम पर है। उन्होंने इस मैदान पर 11 मैचों से 1122 रन बनाए हैं। यदि तेंदुलकर ईडन और वानखेडे दोनों में 1000 रन बनाने में सफल रहते हैं तो वे दो मैदानों पर 1000 या इससे अधिक रन बनाने वाले दूसरे भारतीय बल्लेबाज बन जाएंगे। गावसकर ने चेन्नई के चेपक में भी 1000 रन का आंकड़ा पार किया है। रेकार्डों के बादशाह तेंदुलकर का किसी एक मैदान पर अब तक सबसे बेहतर रेकार्ड चेन्नई के चेपक स्टेडियम में है जहां उन्होंने दस मैचों में 88.18 की औसत से 970 रन बनाए हैं। इसमें पांच शतक और दो अर्धशतक शामिल हैं।

चेपक के बाद बंगलूर के एम चिन्नास्वामी स्टेडियम का नंबर आता है जिसमें तेंदुलकर ने नौ मैचों में 869 रन अपने नाम पर लिखवाए। ईडन गार्डन इस सूची में अभी तीसरे और वानखेडे चौथे स्थान पर है। आस्ट्रेलिया के सिडनी क्रिकेट ग्राउंड पर तेंदुलकर के बल्ले से केवल पांच टैस्ट मैचों में 785 रन निकले हैं जिसमें नाबाद 241 रन की ऐतिहासिक पारी भी शामिल है। उन्होंने दिल्ली के फिरोजशाह कोटला स्टेडियम में 759 रन, पीसीए मोहाली में 767 रन, कोलंबो के सिंहलीज स्पोर्ट्स कांपलेक्स में 698 रन, नागपुर के विदर्भ सीए मैदान पर 679 रन और अहमदाबाद के सरदार पटेल मोटेरा स्टेडियम पर 642 रन बनाए हैं।

* * * * *

SOTST-IGNOU/P.O. 2T February, 2014

Printed at : Akashdeep Printers, 20-Ansari Road, Darya Ganj, New Delhi-110002